बरन पुंज

(बरनवाल समाज में अलख जगाती पत्रिका)

वर्ष 5 | अर्द्धवार्षिकांक 1 | जनवरी-जून 2018 | पृष्ठ 28

बरनवाल वैश्य सभा दिल्ली (पंजी.)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को **मोदी सूत्र** पुस्तक समर्पित करते लेखक श्री हरीश चन्द्र बर्णवाल।

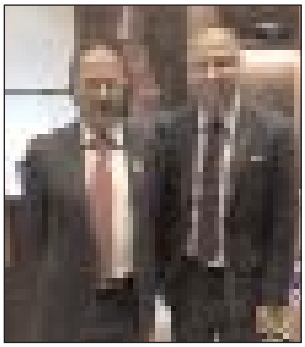

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल (मध्य) व हरियाणा मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी. जैन के साथ भारतीय दूतावास वीजिंग में राजनयिक के तौर पर कार्यरत विपिन कुमार बरनवाल।

मणिपुर के मुख्यमंत्री मा. बिरेन सिंह (6) व मणिपुर के राज्यपाल नजमा हेपतुल्ला को स्मृति चिह्न सौंपते प्रेस एसोसिएशन के अध्यक्ष व देशबंधु हिन्दी दैनिक के कार्यकारी संपादक श्री जयशंकर गुप्त (7)।

बरन पुंज

बरनवाल समाज में अलख जगाती पत्रिका

सलाहकार संपादक

कै. आरपी बरनवाल

संपादक

दीपक
09312381305

संपादक मंडल

मुन्नी लाल
डा. अजय कुमार
आरती बरनवाल
जयप्रकाश बरनवाल
प्रहलाद बरनवाल
अधिवक्ता उमेश बर्णवाल

प्रतिनिधि मंडल

प.बंगाल : सीए गौतम बरनवाल 9903836400
महाराष्ट्र: अरविन्द कुमार बरनवाल 9049455568
हरियाणा: सुरेश प्रसाद 9466200712
आंध्र प्रदेश: संजय कुमार 8977729093
कर्नाटक: रोहित कुमार 7760998390

संपादकीय कार्यालय

आई 7, सेक्टर 12,
नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301
फोन : 9811044409, 9654360704
ईमेल : diparticommunication@gmail.com
baranwalvaishyasabhadelhi@gmail.com

नोट : सभी पद अवैतनिक है।

अनुक्रमिका

1. संपादकीय 4
2. परिचय सम्मेलन एक सार्थक पहल 5
3. देवघर में योग शिविर आयोजित 6
4. मेधावी छात्र सम्मानित 6
5. युवा मंच ने चलाया सफाई अभियान 7
6. सान्वी दिखा रही है जीने की नई राह 7
7. कविता : मां, सच-सा, Get up 8, 17, 19
8. दिल्ली में खुला मैडम तुसाद म्युजियम 9
9. एलआईसी में निवेश का सुनहरा मौकाः जीवन उत्कर्ष .. 10
10. चीन में शेयर्ड साइकिल का अनुभव 11
11. बैंकर्स को राज्यपाल से मिला सम्मान 12
12. कहानीः सैनिक और बन्दूक 13
13. निर्बल और सबल की लड़ाई : चंदा बाबू 16
14. सगाई की अंगूठी अनामिका में ही क्यों? 17
15. चित्रकला प्रतियोगिता नंबर 4 18
16. शुभचिंतकों से अपील 18
17. शरीर के लिए पानी कितना जरूरी 19
18. सदस्यों की सूची 20
19. प्रेरक : चित्रकारी 26
20. ऑटोग्राफ देना अपनी परंपरा नहीं 28
21. आयोग के अध्यक्ष बने अरविंद प्रसाद 28
24. रैसिपीः सूजी की कचौरी 29
25. चित्रकला प्रतियोगिता 3 के परिणाम 30
26. बरन पुंज पाठकों की सूची 31

बरनवाल वैश्य सभा दिल्ली के लिए सत्य प्रकाश बरनवाल द्वारा बी 30, गली नं. 9, मंडावली ऊंचे पर, दिल्ली 110092 से प्रकाशित एवं 102, एल.एस.सी., ऋषभ प्रिंटर्स, प्रीत विहार, दिल्ली से मुद्रित।

वैधानिक चेतावनी : बरन पुंज में प्रकाशित लेख, विचार एवं रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के है। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक उनसे सहमत हों, जरूरी नहीं है। समस्त विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादक की कलम से

स्कूल से लेकर खेल के मैदान में आजकल जो देखने को मिल रहा है, वह ये कि चाहे जैसे मिले, लक्ष्य हासिल करना है। उसके लिए चाहे गलत रास्ते पर ही क्यों न चलना पड़े। रेयान स्कूल, गुड़गांव की घटना हम सबके लिए एक बहुत बड़ी सीख है। स्कूल में अगर सूचना को रटाने के साथ-साथ नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाता तो हमें यह दिन देखना नहीं पड़ता। बच्चों में नैतिकता का पाठ पढ़ाना, सही गलत का ज्ञान कराना, रिजल्ट में अंक के पीछे नहीं, समझ को आत्मसात करना सिखाने की जरूरत है। ये नैतिकता का यह पाठ हमें धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने से मिलता है, उसकी सही व्याख्या को समझने से मिलेगा।

दलगत राजनीति से लेकर संस्थागत राजनीति में भी भाषा का स्तर गिर गया है, बोलने का सलीका अब निम्न स्तर का हो गया है। ऐसे में, सार्वजनिक जीवन में रहने वाले लोगों को चाहे वह किसी भी स्तर के संस्था के लिए काम करते हों, उन्हें जीवित लोगों में किसी को भी आदर्श मानने से पहले कई बार सोचना चाहिए। यह नौकरी या व्यवसाय के क्षेत्र पर भी लागू होता है। नौकरी पेशे में हों या व्यवसाय में आप जिसे अपना मानते हैं, उनके प्रति सजग रहने की जरूरत है। जो भी निर्णय लें, निर्णय करने से पहले दिमाग खुला रखना चाहिए। भावना में बहकर लिया गया निर्णय कई बार सिर्फ आपको दुख देता है। उसका दुष्प्रभाव आप पर तो पड़ता ही है। कई बार उसका असर परिवार पर भी देखने को मिलता है।

बरनवाल वैश्य सभा दिल्ली ने प्रत्येक तीन माह पर एक कार्यक्रम करने की योजना बनाई थी - दिसंबर में अहिबरण जयंती, मार्च में होली मिलन, जून-जुलाई में परिचय सम्मेलन, सितंबर-अक्टूबर में स्थापना दिवस। संयोग ऐसा रहा कि इस बार स्थापना दिवस की केवल और केवल चर्चा होकर ही रह गई। यह आदर्श स्थिति नहीं है। हमें यह विचार करने की जरूरत है कि 32 वर्षों से संचालित सभा की उपलब्धि क्या है? संस्था के माध्यम से हमने किया क्या है? इस तरह के प्रश्न और विचार अपने मन में लाने की आवश्यकता है। ऐसे प्रश्न से हर माह, हर साल जूझना चाहिए। ऐसे प्रश्नों को अपने जीवन में लाना चाहिए। यही प्रश्न है जो हमें प्रेरणा देगी। हमें इन्हीं प्रश्नों नई मंजिल की ओर देखने का दुस्साहस होगा। काम करने के लिए लक्ष्य दिखना चाहिए, जब तक जाना कहां है, ये पता नहीं चलेगा तो हम जाने के लिए रास्ता कौन सा लेंगे, किसे माध्यम बनाएंगे, हमारा नेतृत्व कौन करेगा, यह तय करना असंभव है।

इस अंक में सभा द्वारा आयोजित विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन, समाज के लोगों की उपलब्धि, समाज की गतिविधियों, कहानीकार सुरेश बरनवाल की पुरस्कृत कहानी सैनिक और बंदूक को प्रकाशित किया है। इसी अंक में चित्रकार के नाम से प्रेरक प्रसंग को शामिल किया है। बरन पुंज का नया अंक आपके हाथ में है। बरन पुंज टीम इस अंक को यादगार बनाने में कितना सफल है, यह निर्णय आपके हाथ में है। अगले अंक में पाठकों की कलम से नया कॉलम शुरू करेंगे। इसमें आपके पत्र को प्रकाशित करेंगे। आपके विचार, सुझाव के लिए प्रतीक्षारत ...

आपका मित्र

परिचय सम्मेलन एक सार्थक पहल

☞ मुन्नी लाल

दिल्ली में पहली बार हुआ युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन

बरनवाल वैश्य सभा का चिर प्रतीक्षित सपना 9 जुलाई को साकार हुआ। यह सपना था - दिल्ली तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (गाजियाबाद, नोएडा, फरीदाबाद और गुरुग्राम आदि) में निवास करने वाले विवाह योग्य बरनवाल युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन आयोजित करना।

पिछले कई वर्षों से इस संबंध में सभा की बैठकों में चर्चा तो होती थी लेकिन किसी न किसी कारणवश यह मूर्त रूप नहीं ले पा रहा था। परिचय सम्मेलन की चर्चा को मूर्त रूप में लाने के लिए जिन लोगों ने मेहनत की, वे सभी प्रशंसा के पात्र हैं। उनमें प्रमुख रूप से सभा के महासचिव इ. सत्यप्रकाश बरनवाल, उपाध्यक्ष श्री अरुण कुमार, मीडिया सचिव श्री दीपक राजा, कार्यक्रम सचिव श्री जय प्रकाश बरनवाल, संगठन मंत्री एडवोकेट उमेश बर्णवाल हैं। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में बरनवाल वैश्य सभा की महिला प्रकोष्ठ का प्रयास सराहनीय है। सेल कोर्डिनेटर उमेश कुमार फरीदाबाद से आते हैं। आईटीओ उनके लिए काफी दूर है। इसके बाद भी इस कार्यक्रम में जिस तत्परता से उपस्थित थे, यहां उनका समर्पण भाव की झलक मिलती है।

सभा के तत्वावधान में 9 जुलाई, 2017 को आईटीओ, दिल्ली के पास हिन्दी भवन में कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में झारखंड विद्युत नियामक आयोग के चेयरमैन मा. अरविंद प्रसाद मुख्य अतिथि के रूप में आए। विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत सरकार में संयुक्त सचिव के रूप में कार्यरत श्री ज्ञानेश भारती और आईडीएएस के कंट्रोलर जनरल से सेवानिवृत मा. उमाशंकर प्रसाद उपस्थित थे।

विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन के इस कार्यक्रम में 92 लोगों का बायोडाटा आया और 52-55 युवक-युवतियां स्वयं इस कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। सबने अपना-अपना संक्षिप्त परिचय के रूप में शिक्षा और नौकरी के बारे में बताया। इस सम्मेलन में दिल्ली एनसीआर के लोग ही नहीं गया, आसनसोल, बोकारो, पटना, देवघर, कोलकाता, वाराणसी, देवरिया, सोनभद्र, सुल्तानपुर, लखनऊ, पानीपत और राजस्थान के नागौर से अपने समाज के लोगों ने रूचि दिखाई।

सम्मेलन में आए युवक-युवतियों की एक झलक।

दिल्ली एनसीआर ही नहीं गया, पटना, आसनसोल, कोलकाता, बोकारो, देवघर, वाराणसी, देवरिया, सुल्तानपुर से लेकर पानीपत, नागौर क्षेत्र से समाज के लोगों ने रुचि दिखाई

बरनवाल वैश्य सभा दिल्ली का यह पहला कार्यक्रम था। सभा की कार्यकारिणी के लिए यह पहला प्रयास था, नए तरह का अनुभव भी आया। समाज के बंधुओं ने जिस तरह से इस कार्यक्रम दिलचस्पी दिखाई, उससे सभा का उत्साह बढ़ गया है। आने वाले समय में इस कार्यक्रम को थोड़ा और विस्तार देने का प्रयास होगा। इस संबंध में किसी को कोई सुझाव देना हो या विचार प्रकट करना हो, वो बेधड़क अपनी बात पत्र के माध्यम से कर सकते हैं। हम हर तरह के विचार का खुले मन से स्वागत करेंगे। जो सुझाव अमल में लाने योग्य होगा, यथासंभव उसे करेंगे। यह सभा की ओर से मैं विश्वास देता हूं। समाज के लोगों से आग्रह है कि आने वाले समय में भी ऐसे ही रुचि दिखाकर सभा उत्साहवर्द्धन करते रहेंगे। ■

(लेखक बरनवाल वैश्य सभा के संरक्षक हैं।)

देवघर में योग शिविर आयोजित

- बरनवाल महासभा के सहयोग से बरनवाल सेवा सदन में एक माह चला योग शिविर
- शिविर में आए सेवा भारती के क्षेत्र प्रमुख अजय कुमार

बरनवाल सेवा सदन, देवघर में 31 अक्टूबर से योग शिविर संचालित योग शिविर नवंबर माह में संपन्न हो गया। योग शिविर का आयोजन बरनवाल महासभा के तत्वावधान में किया गया। इस शिविर में शनिवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अनुशांगिक संगठन सेवा भारती के क्षेत्र प्रमुख श्री अजय कुमार भी शामिल हुए।

योग शिविर में क्षेत्र प्रमुख श्री अजय कुमार का स्वागत बरनवाल सेवा समिति के अध्यक्ष दीनबंधु बरनवाल, योग शिक्षक समीर कुमार, शंभू बरनवाल, युवा प्रभारी अनुज त्यागी समेत सभी गणमान्य लोगों ने किया। श्री अजय कुमार ने शिविर में उपस्थित योग प्रशिक्षुओं का मार्गदर्शन किया और योग से व्यक्तित्व के विकास से लेकर सामाजिक विकास पर चर्चा की। बरनवाल धर्मशाला यानि बरनवाल सेवा सदन की संचालन समिति के सौजन्य से संचालित निःशुल्क योग प्रशिक्षण शिविर में योग करने वालों की संख्या लगातार बढ़ी है। ■

सेवा भारती क्षेत्र प्रमुख श्री अजय कुमार का स्वागत करते बरनवाल सेवा समिति के पदाधिकारी।

प्रतिभाशाली विद्यार्थी सम्मानित

रांची। बरनवाल सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में झारखंड के मेधावी बरनवाल छात्र-छात्राओं को 30 जुलाई, 2017 को 105 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। प्रतिभा सम्मान समारोह का कार्यक्रम रांची के कारमेल स्कूल में संपन्न हुआ।

प्रतिभा सम्मान के लिए न्यूनतम योग्यता 2017 में 10वीं और 12वीं झारखंड बोर्ड के लिए 75 प्रतिशत, आईसीएसई के लिए 85 प्रतिशत, सीबीएसई के लिए 9 सीजीपीए यानि 90 प्रतिशत रखा गया था। 2017 में इंजीनियरिंग और मेडिकल कोर्स के लिए चयनित विद्यार्थियों को भी प्रतिभा सम्मान से नवाजा गया है।

प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को झारखंड सरकार के मुख्य सचिव सुनील बर्णवाल आईएएस, मृत्युंजय बर्णवाल आईएएस, महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट पीएल बर्णवाल, प्रदेश अध्यक्ष श्री सदानंद बर्णवाल, महिला प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती पूनम बर्णवाल आदि ने सम्मानित किया। ■

साभार: www.diparti.com

कार्यक्रम में उपस्थित झारखंड सरकार के मुख्य सचिव सुनील बर्णवाल आईएएस (बीच में), मृत्युंजय बर्णवाल आईएएस, महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट पीएल बर्णवाल, प्रदेश अध्यक्ष श्री सदानंद बर्णवाल, महिला प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती पूनम बर्णवाल।

पूरे झारखंड से 105 छात्र-छात्राएं सम्मानित

गंगा घाट पर चलाया सफाई अभियान

पटना। बरनवाल युवा मंच की ओर से पटना में सफाई अभियान चलाया गया। यह सफाई अभियान 30 जून, 2017 से लेकर 2 जुलाई 2017 तक जारी रहा। युवा मंच के कार्यकर्ताओं ने तीन दिन लगातार दरभंगा हाउस के आसपास बने गंगा नदी के किनारे काली घाट समेत कई घाटों की सफाई की।

मंच प्रमुख और सफाई अभियान के संयोजक प्रमोद बर्णवाल ने बताया कि गंगा को स्वच्छ बनाने के लिए अभियान चलाया गया। गंगा की स्वच्छता बनी रहे, इसके लिए लोगों को जागरूक किया गया। काली घाट पर आने वाले लोगों को इस बारे में विस्तार से समझाया गया। इस अभियान में योगदान देने वालों में अंजू रानी, रेखा बर्णवाल, सोनल, राकेश, कोमल समेत कई लोग शामिल थे।

साभार: www.diparti.com

संघर्ष गाथा

सान्वी दिखा रही है जीने की नई राह

बिहार का सीवान जिला देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद, महाठग नटवरलाल या फिर सजायाफ्ता नेता व पूर्व सांसद मो. शहाबुद्दीन के नाम से जाना जाता है। चर्चित तेजाब कांड के पीड़ित न्याय के लिए संघर्षरत चंदा बाबू की गाथा और उनकी जीवटता के कारण भी सीवान लोगों की जुबान पर है। इन दिनों सीवान एक बार फिर चर्चा के केंद्र में है। चर्चा का कारण एक ग्यारह साल की बच्ची है सान्वी जिसे बच्चे प्यार से विद्या दीदी कहते हैं। सान्वी ने खेलने की उम्र में, वह करने की ठानी है, जिसकी कल्पना कोई भी इस उम्र में नहीं करता है। नन्ही समाजसेविका सान्वी उर्फ विद्या **ज्ञान दान** का यज्ञ कर रही है और अपना जीवन इसके लिए आहूत कर रही है।

बच्चों को पढ़ाती (दाएं) और नानी और छोटी बहन के साथ सान्वी।

आंखों से दिव्यांग सान्वी सिर्फ ग्यारह वर्ष की है और पांचवीं कक्षा की छात्रा है। वह पिछले दो साल से अपने से छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखा रही है। किसके साथ, किस तरह बात करना चाहिए, यह संस्कार बच्चों में भरने का प्रयास कर रही है। सीवान के गुठनी प्रखंड के छोटे से गांव मझवलिया में रहने वाली सान्वी अपनी मां के साथ नानीघर में रहती है।

स्वच्छ और शिक्षित समाज में रहना है तो हमें ही समाज की कुरीतियों और गंदगियों को समाप्त करने का बीड़ा उठाना पड़ेगा। कहना जितना आसान है, उसके लिए जुटना और जुटे रहना, उतना ही मुश्किल है। लेकिन सान्वी के लिए यह दिनचर्या बन गया है। वह रोजाना स्कूल से आने के बाद अपने से कम उम्र के बच्चों को खुले आसमान के नीचे कुरीतियों और अज्ञानता के अंधकार को दूर करने के लिए ज्ञान की ज्योत को अपनी मेहनत और लगन से तेज और तेज कर रही है। प्रतिभा की धनी सान्वी एक वक्त में मौखिक और लिखित दोनों काम कर लेती है। वह आस-पड़ोस के पांचवीं तक

के करीब 40 बच्चों को प्रतिदिन पढ़ाती है।

वर्ष 2015 से शुरू किया अभियान

सान्वी का कहना है कि वह जब स्कूल से पढ़कर घर लौटती थी तो यहां के बच्चों को आपस में काफी गन्दी-गन्दी गालियां देते हुए सुनती थी। इनकी बातों को सुनकर उसके मन में यह ख्याल आया कि इन सबको शिक्षा और संस्कार देने की कोशिश करनी चाहिए। इसके बाद सान्वी ने स्वतः ही बच्चों को वर्ष 2015 से पढ़ाना शुरू कर दिया। सान्वी यह काम बहुत ही सेवा भाव से करती है।

> प्रतिभा की धनी सान्वी एक वक्त में मौखिक और लिखित दोनों काम कर लेती है। उसके पास 5वीं कक्षा के बच्चे आते हैं।

खेलने की उम्र में फैसला

मझवालिया के पिंटू बर्णवाल और सीमा बर्णवाल की बेटी सान्वी जन्म के समय ही आंख से दिव्यांग पैदा हुई थी। नाना भीम बताते हैं कि जन्म से ही सान्वी की आंख में रोशनी नहीं थी। हालांकि, मात्र पांच माह की उम्र में दिल्ली के एम्स में इलाज कराने के बाद अब सान्वी को चश्मे के सहारे अब थोड़ा दिखने लगा है।

मां भी सहयोगी

सान्वी की मां सीमा पास के ही प्रखंड में ब्यूटी पार्लर चलाती हैं। वह कहती हैं कि सान्वी मेरी जिंदगी है। उसका हर फैसला मुझे सुख देता है। उसकी इस पहल से वह काफी खुश है। वह कहती हैं कि उससे जितना हो सकता है, वह उसका सहयोग करती हैं।

सान्वी पर बरनवाल समाज को गर्व

सान्वी मात्र 11 साल की उम्र में समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास कर रही है, वह वाकई काबिले तारीफ है। बच्चों की विद्या दीदी बनीं नन्हीं समाजसेविका सान्वी पर बरनवाल समाज को गर्व है। सान्वी बच्चों का सकारात्मक शैक्षणिक विकास करना ही अपना लक्ष्य मानती है। सान्वी के लक्ष्यपूर्ति में बरनवाल समाज अग्रणी भूमिका निभाएगा। सान्वी हमें नई राह दिखा रही है। हमें सान्वी से प्रेरणा लेने की जरूरत है। ■

साभारः www.diparti.com

कविता

मां

ममता की तू है रे मूरत
ईश्वर के अवतार समान।
हे जननी तुम्हें है प्रणाम
मात कहे जिसे हर संतान।।

किस मिट्टी का बना तेरा दिल,
औलाद के लिए जो घबराये।
फूलों सा तेरा दिल है नाजुक,
संतान के लिए फट जाए।।

चाहे कोई कितना बड़ा हो जाये,
करो अपनी मां का सम्मान।
जिसके बल पे ये जीवन है पाया ,
करो न कभी उनका अपमान।।

जी करता है बच्चा ही रहूं,
मां के गोद मे ही सोऊं।
जिसने मुझे प्यार से पाला है,
उसके मैं नित्य चरण धोऊं।।

- **आर्यन बरनवाल**
कक्षा-8, दून पब्लिक स्कूल,
धनबाद, झारखंड

दिल्ली में खुला मैडम तुसाद म्युजियम

विश्व का 23 वां, भारत का पहला मोम के पुतले का संग्रहालय

दिल्ली। विश्व प्रसिद्ध मैडम तुसाद का म्युजियम दिल्ली में आम लोगों के लिए एक दिसंबर से खुल गया है। यह म्युजियम सप्ताह के सातो दिन खुला रहेगा। इस म्युजियम में विश्व के प्रसिद्ध 51 शख्सियतों के मोम के पुतले हैं, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, सरदार पटेल, अभिनेत्री मधुबाला, क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर, कपिलदेव, ब्रायन लारा, धावक मिल्खा सिंह, बॉक्सर मैरी कॉम, डांसर माइकल जैक्सन प्रमुख हैं।

पूरे विश्व में मैडम तुसाद संग्रहालय 23 जगहों पर है। भारत में पहला और विश्व का 23वां संग्रहालय दिल्ली में खुला है। यह दिल्ली के दिल कहे जाने वाले कनॉट प्लेस में है। यहां की ऐतिहासिक रीगल सिनेमा की इमारत में मैडम तुसाद का संग्रहालय है। मरलिन एंटरटेनमेंट्स इंडिया के डायरेक्टर अंशुल जैन ने कहा, हम इस संग्रहालय को लेकर बहुत उत्साहित और रोमांचित है।

मोम के पुतलों के नई दिल्ली संग्रहालय को सात खंडों में विभाजित किया गया है। इसमें इतिहास, खेल, संगीत, फिल्म और राजनीतिक जगत की मशहूर 51 हस्तियों के मोम से बने पुतलों को रखा गया है। फिल्म जगत से सलमान खान, टॉम क्रूज, राज कपूर, रणबीर कपूर आदि के मोम से बने पुतले हैं। मैडम तुसाद के प्रवक्ता ने बताया कि राज कपूर का मोम का पुतला अकेला ऐसा पुतला है जो श्वेत श्याम है।

एक खंड में आगंतुकों को मैडम तुसाद का इतिहास बताएगा जिसमें बताया जाएगा कि कैसे मोम का पुतला बनता है। इस खंड में ही 20 मिनट की एक फिल्म दिखाई जाएगी। इस फिल्म में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने मोम का पुतला बनाए जाने के अनुभवों को बताते हैं। खेल खंड में मेरी कॉम, डेविड बेकहम, मिल्खा सिंह और उसैन बोल्ट के साथ ही भारतीय क्रिकेटर कपिल देव और सचिन तेंदुलकर भी है। इतिहास के खंड में महात्मा गांधी, भगत सिंह, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, सरदार पटेल, एपीजे अब्दुल कलाम और मोदी के मोम के पुतले हैं।

म्युजियम का लुत्फ उठाने के लिए वयस्कों के लिए 960 रुपए का टिकट है जबकि बच्चों के लिए 760 रुपए का टिकट है। 11 साल से कम उम्र के बच्चे के साथ किसी वयस्क का होना जरूरी है। यहां आने वाले दर्शकों के लिए कुछ चुनिंदा पुतले के सामने कैमरे की व्यवस्था है। वहां दर्शक पोज के साथ फोटो शूट करा सकते हैं। एक फोटो की कीमत सौ रुपए है। इसके साथ ही यहां की यादों को संजोने के लिए खुद के हाथ का क्लोन भी बनवा सकते हैं। एक हाथ के क्लोन के लिए चार सौ पचास रुपए का शुल्क देना होता है। इसे तैयार करने में करीब चार घंटे लगते हैं।

मैडम तुसाद म्युजियम का इतिहास

पूरे विश्व में जहां भी मैडम तुसाद म्युजियम है, उसका मालिकाना हक मरलिन एंटरटेनमेंट्स के पास है। मैडम तुसाद का पहला संग्रहालय 1835 में लंदन की बेकर स्ट्रीट में बना। वहां पर 200 साल से ज्यादा वक्त से संग्रहालय चल रहा है और आज विश्व में 23 प्रमुख स्थलों पर यह संग्रहालय है। इसमें लंदन, शंघाई, हांगकांग, बर्लिन और अब नई दिल्ली भी शामिल है। ■

Dr. Pradeep Baranwal

M: 9212598510
9911008595

Baranwal Charitable

हमारे यहां सभी प्रकार के टेस्ट होते हैं।
खून, मल, वीर्य इत्यादि की जांच उचित मूल्य पर होती है।
प्रतिदिन सुबह 10 बजे से 11 बजे तक 20 रुपए में दवा दी जाती है।

ADDRESS : 15/18, BLOCK NO. 15, NEAR MOTHER DAIRY BOOTH, KALYANPURI, DELHI 110091

फिक्स डिपॉजिट की तरह है जीवन उत्कर्ष

एकमुश्त निवेश पर 10 गुणा रिस्क कवर के साथ आकर्षक रिटर्न

भारतीय जीवन बीमा की एक बहुत ही बेहतरीन पॉलिसी मार्च 2018 तक उपलब्ध है। उसका नाम है जीवन उत्कर्ष। इसमें एकमुश्त रकम 12 साल के लिए फिक्स डिपॉजिट की तरह एक बार में देना है और एलआईसी इस पर निवेश का 10 गुणा बीमा कवर करता है। साथ ही निवेश पर आकर्षक रिटर्न भी है।

किसके नाम से लिया जा सकता है पॉलिसी

छह साल के बच्चे के नाम से लेकर के 47 साल उम्र के के व्यक्ति के लिए यह पॉलिसी उपलब्ध है।

जीवन उत्कर्ष पॉलिसी किनके लिए बेहतर

- यह पॉलिसी उन लोगों के लिए बेहतर है, जिन्हें लगातार लंबे समय तक प्रीमियम चुकाना अच्छा नहीं लगता है।
- यह पॉलिसी उनके लिए बहुत अच्छा है जिनकी आय अच्छी है और एक बड़ी राशि बैंक में रखते हैं।
- यह पॉलिसी उन लोगों के लिए बहुत अच्छा है जो एकमुश्त रकम देकर बड़ा रिस्क कवर चाहते हैं।
- यह पॉलिसी उनके लिए अच्छा है जिनके बच्चे छोटे हैं। उन्हें लगता है कि कॉलेज के समय बच्चे के लिए एकमुश्त रकम चाहिए। उनके लिए पॉलिसी बेहतरीन अवसर लेकर आया है।

Diparti Communication

(Insurance, Taxation & Media Consultant)

ALL TYPES OF LIC POLICES
ALL TYPES OF MUTUAL FUND
MEDICAL INSURANCE POLICIES
MF, ITR, DSC, PAN, TAN Other Services

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

Mobile : 9312381305
Whatsap : 7836090732
Email : diparticommunication@gmail.com
www.diparti.com

किश्तवार रिटर्न का विकल्प

इस पॉलिसी में रिटर्न के रूप में मिलने वाले रकम को किश्तवार भी ले सकते हैं। रकम को 5, 10 और 15 सालों की अवधि में बांटकर मासिक, त्रैमासिक, छमाही और वार्षिक रूप में भी ले सकते हैं। संतानों के शिक्षा खर्च को ध्यान में रखते हुए रिटर्न या पेंशन के रूप में किश्तवार विकल्प को चुन सकते हैं।

जमा प्रीमियम पर टैक्स में छूट और रिटर्न टैक्स फ्री

जीवन उत्कर्ष पॉलिसी के तहत एलआईसी में रकम रखने वाले को प्रीमियम जमा करने पर आयकर में उनके टैक्स स्लैब के अनुसार छूट मिलती है। इसके साथ ही पॉलिसी का समय पूरा होने पर एलआईसी से जितना रकम मिलता है, वह सारा का सारा पैसा टैक्स फ्री होता है। सरल शब्दों में और एक वाक्य जीवन उत्कर्ष पॉलिसी के बारे में कहें तो जीवन उत्कर्ष 12 साल की पॉलिसी है। इस प्लान के माध्यम से आप एक निश्चित रकम एलआईसी में 12 साल के लिए एकमुश्त जमा करते ही जमा रकम का दस गुणा रिस्क कवर की सुविधा मिलने लगती है। बीमा अवधि पूरा होते ही यानि 12 साल बाद जमा रकम का लगभग ढाई गुणा रकम आपको एलआईसी से टैक्स फ्री मिलता है।

Diparti Communication अपनी आमदनी का 10 प्रतिशत राशि सामाजिक कार्यों पर खर्च करता है। आप इसके माध्यम से एलआईसी में निवेश कर इनडायरेक्ट रूप से सामाजिक कार्य करने में मदद करते हैं। ■

चीन में शेयर्ड साइकिल का अनुभव

☞ विपिन कुमार बरनवाल

साइकिल एक उपयोगी और सुरक्षित सवारी मानी जाती है। इसे कोई भी चला सकता है, चाहे वो बच्चे हों, बुढ़े हों या जवान। साइकिल को चलाने के लिए न तो लाइसेंस की आवश्यकता होती है और न ही पेट्रोल की। छोटी यात्राओं के लिए साइकिल सबसे अच्छी और सस्ती सवारी है।

चीन को कभी साइकिल का देश कहा जाता था। साइकिल की तीन-तीन लेन हुआ करती थी। आर्थिक प्रगति के बाद चीन में निजी वाहनो का प्रचलन बढ़ा है। सड़कों पर वाहनों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई। इसके कारण ट्रैफिक जाम रोज की समस्या बन गई। इसके साथ-साथ पर्यावरण को भी काफी नुकसान हुआ। खास करके जाड़े के दिनों में शहरों में सांस लेना मुश्किल हो जाता है। इन समस्याओं को भी ध्यान में रखते हुए चीन में शेयर्ड साइकिल को प्रोत्साहित किया गया। इस क्षेत्र में कई कंपनियां है जैसे ऑफो, मोबाइक, ब्लू गोगो आदि। इन कंपनियों की लाखों साइकिल चीन के सड़कों की अंग बन गई है।

शेयर्ड साइकिल की खासियत है कि ये हल्के, ट्यूबलेस टायर जिनके कारण पंचर होने का खतरा नहीं है, स्पोकलेस पहिए होते हैं। इसके अलावे ये मैग्नेशियम अलॉय के बने होते हैं जिस कारण इसे रख-रखाव की जरूरत काफी कम होती है। शेयर्ड साइकिल जीपीएस से युक्त होते हैं जिससे इसे अपने मोबाइल फोन से लोकेट किया जा सकता है।

शेयर्ड साइकिल का उपयोग करना बेहद सरल है। अपने मोबाइल फोन पर शेयर्ड साइकिल के मोबाइल एप को डाउनलोड करके अपने मोबाइल को रजिस्टर्ड करना पड़ता है। एक निश्चित रकम (सामान्य सा) सिक्युरिटी के रूप में जमा करना होता है। मोबाइल एप से शेयर्ड साइकिल पर बने क्यू आर कोड को स्कैन कीजिए। एक कोड नंबर मोबाइल पर आएगा, उससे साइकिल का लॉक खुल जाएगा।

चीन के लगभग सभी मुख्य शहरों के सड़कों के किनारे हजारों की संख्या में शेयर्ड साइकिल खड़े मिलेंगे। इसे कहीं से भी ले सकते हैं और जहां आपका काम समाप्त हो जाए, छोड़ सकते हैं। और तो और, आपसे किराया भी नाम मात्र लिया जाएगा।

छोटी यात्राओं के लिए शेयर्ड साइकिल एक वरदान से कम नहीं है। कई बार बस का इंतजार कर रहे होते हैं। तब न तो बस

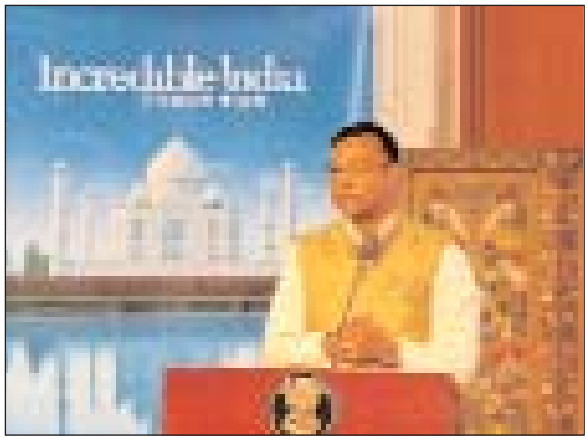

आती है और तो और कई बार तो टैक्सी भी नहीं मिलती है। पैदल चलने पर समय भी अधिक लगता है। पैदल चलने से थकावट भी होती है। ऐसे में, शेयर्ड साइकिल एक उत्तम विकल्प होता है। इसके अलावे घर से बस स्टैंड या मेट्रो स्टेशन जाने के लिए न तो बस की सुविधा होती है और न टैक्सी वाला जाने के लिए राजी होता है। यदि हो भी गया तो उसका किराया काफी महंगा साबित होता है। ऐसे में, शेयर्ड साइकिल हमारा समय भी बचाती है और यह स्वास्थ्यवर्धक भी है। फर्स्ट माइल और लास्ट माइल के लिए शेयर्ड साइकिल बहुत ही उपयोगी है।

> साइकिलिंग के बहाने समय पर ऑफिस और घर आ-जा सकते हैं, बल्कि हमारा व्यायाम भी हो जाता है

सुबह और शाम में, जब ऑफिस जाने और ऑफिस से आने का समय होता है, उस पिक ऑवर में ट्रैफिक जाम सा हो जाता है। वाहनों की रफ्तार थम सी जाती है। यदि दुर्भाग्यवश सड़क पर कोई दुर्घटना हो जाती है तो ट्रैफिक थम सा जाता है। ये सारा मामला ठीक होने में कई बार ज्यादा समय भी लगता है। ऐसे समय में, शेयर्ड साइकिल राम बाण साबित होता है। एक तो अलग साइकिल लेन होने के कारण सुरक्षित भी है और इसकी रफ्तार भी नहीं थमती है। न केवल शेयर्ड साइकिल से समय पर ऑफिस और घर आ-जा सकते हैं, बल्कि साइकिलिंग से हमारा व्यायाम भी हो जाता है, इससे हमारा शरीर भी ऊर्जावान हो जाता है और मन भी आनंदित होता है।

कई बार शॉपिंग मॉल जाते हैं। बीजिंग के शॉपिंग मॉल में कार पार्किंग ढुंढना भी एक समस्या है। कई बार तो शॉपिंग से ज्यादा समय कार को पार्क करने में लग जाता है, क्योंकि पार्किंग खाली नहीं होती है। ऐसे में, शेयर्ड साइकिल बहुत उपयोग साबित होता है।

एक तो पार्किंग का झंझट नहीं, क्योंकि इसे कहीं भी पार्क किया जा सकता है। ऊपर से पार्किंग का भी पैसा बचता है। छोटा-मोटा सामान भी साइकिल के कैरियर में रखकर ला सकते हैं।

बीजिंग में साइकिल चोरी भी होती है। हमारे कई साथियों का इसका कटु अनुभव भी है। शेयर्ड साइकिल के साथ यह समस्या नहीं है। इसके चोरी होने का खतरा भी नहीं है और न ही इसकी चिंता। कहने का तात्पर्य है कि आप चिंतामुक्त साइकिल सवारी का आनंद ले सकते हैं। पर्यटन के दृष्टि से भी शेयर्ड साइकिल काफी उपयोगी है। साइकिलिंग के साथ-साथ शहर की सुंदरता का आनंद भी लेते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि शेयर्ड साइकिल की अपनी समस्या नहीं है। इसकी अपनी समस्याएं भी है।

शेयर्ड साइकिल को कहीं भी छोड़ने की सुविधा ही सबसे बड़ी समस्या भी है। साइकिल कहीं भी छोड़ने की सुविधा के कारण कई लोग साइकिल को कार लेन में, कार पार्किंग पर या फुटपाथ आदि पर पार्क कर देते हैं। इससे न केवल यातायात बाधित होता है बल्कि रख-रखाव में भी मुश्किलें आती है। इसके अलावा मेट्रो स्टेशन या बस स्टैंड पर बहुत संख्या में, बेतरतीब ढंग से साइकिल पार्क कर दिया जाता है। कई बार तो साइकिल निकालना मुसीबत हो जाता है। कई बार टूटी साइकिल भी अच्छी साइकिल के साथ खड़ी रहती है। खराब साइकिल को अलग रखने की कोई व्यवस्था नहीं है। इसके अतिरिक्त साइकिल रेड लाइट पर वाहनों के तरीके, ट्रैफिक नियमों का सख्ती से पालन भी नहीं करते हैं।

नतीजतन सड़क दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है। इन सबके बावजूद पब्लिक ट्रांसपोर्ट को प्रोत्साहित करने के लिए, शेयर्ड साइकिल एक अच्छा विकल्प है। शेयर्ड साइकिल ने निजी वाहनों के प्रयोग को हतोत्साहित किया है। साथ ही ट्रैफिक जाम और प्रदूषण जैसी समस्याओं से छुटकारा पाने का एक विकल्प भी साबित हुआ है। शेयर्ड साइकिल ने न केवल तन-मन को बल्कि पर्यावरण को भी स्वस्थ बनाने में सहायक सिद्ध हुआ है। यूजर फ्रेंडली होने के कारण न केवल चीन में बल्कि दुनिया के कई देशों में इसका प्रचलन बढ़ा है। चीन के इस मॉडल को आज अमेरिका, थाइलैंड, सिंगापुर, ब्रिटिश देशों के कई शहरों में कॉपी किया जा रहा है। ■

(लेखक भारतीय दूतावास बीजिंग में राजनयिक हैं।)

कहानीकार बैंकर्स को राज्यपाल से मिला सम्मान

पंचकूला। सिरसा (हरियाणा) में रहने वाले बैंक अधिकारी श्री सुरेश बरनवाल को उनकी साहित्यिक उपलब्धि के लिए हरियाणा के राज्यपाल माननीय कप्तान सिंह सोलंकी ने सम्मानित किया है। श्री सुरेश बरनवाल की कहानी **अस्थि विसर्जन** को हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 2014 के लिए पुरस्कृत किया है। इसकी घोषणा 2017 में की गई थी।

पुरस्कृत अन्य दो कहानियों के साथ श्री सुरेश बरनवाल की इस कहानी का नाट्य मंचन विख्यात नाटककार नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के डायरेक्टर रहे श्री देवेन्द्र राज अंकुर द्वारा पंचकुला के टैगोर ऑडिटोरियम में किया गया। राज्यपाल ने इस अवसर पर कहानीकार श्री बरनवाल को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। श्री सुरेश बरनवाल को इससे पहले वर्ष 2005 में भारत सरकार द्वारा आयोजित अखिल भारतीय युवा कहानीकार प्रतियोगिता में उनकी कहानी **सैनिक और बन्दूक** के लिए प्रथम पुरस्कार मिल चुका है। तब तत्कालीन संस्कृति और प्रसारण मंत्री श्री जयपाल रेड्डी ने दिल्ली में उन्हें सम्मानित किया था। श्री बरनवाल की अब तक दो पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनकी प्रथम पुस्तक **संवेदनाओं संग संवाद** काशी विद्यापीठ में नाटककला के पाठ्यक्रम में शामिल है। कहानी **सैनिक और बन्दूक** पर रेडियो नाटक प्रसारित किया जा चुका है। श्री बरनवाल का पूरा परिवार साहित्यिक अभिरूचि से प्रेरित है। इनके छोटे भाई राकेश बरनवाल विभिन्न टीवी सीरियल्स में लेखन का काम कर चुके हैं। वह फिल्म और धारावाहिकों में अभिनय भी करते हैं। ■

शॉल ओढ़ाकर श्री सुरेश बरनवाल को सम्मानित करते हरियाणा के राज्यपाल माननीय कप्तान सिंह सोलंकी।

बरनवाल वैश्य सभा दिल्ली को श्री सुरेश बरनवाल जी की इस उपलब्धि पर अभिमान है। सभा इनके उज्जवल साहित्यिक भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता है। यहां उनकी कहानी **सैनिक और बन्दूक** प्रकाशित कर रहे हैं। ■ **संपादक**

सैनिक और बन्दूक

☞ सुरेश बरनवाल

चारों तरफ बर्फ ही बर्फ थी। मौत की शांति सब तरफ व्याप्त थी। बस कभी-कभी किसी बन्दूक के चलने की आवाज गूंज उठती थी और फिर एक चीख की आवाज भी पीछे-पीछे आ जाती थी। कहीं एक जीवन समाप्त हो जाता था। इसी बर्फ की अंतहीन चादर के ऊपर एक सैनिक चला जा रहा था। उसकी टुकड़ी के करीब-करीब सैनिक मारे जा चुके थे और यदि कोई बच भी रहा था तो उसे पता नहीं था कि वह कहां है। वह खुद रास्ता भटक चुका था। चलते-चलते उसका शरीर थक कर चूर हो गया था।

चौबीस घंटे से उसने कुछ खाया भी नहीं था। उसके कंधे पर टंगे थैले में बिस्किट का एक आखिरी टुकड़ा शेष था जो कि उसने तब तक के लिये बचा रखा था, जब तक वह उसे बचा सकता था। उसे डर था इतनी बुरी स्थिति से भी बुरी स्थिति आ सकती थी। उस

समय यह बिस्किट का टुकड़ा उसके किसी काम आ सकता था। उसके कंधे पर पानी की बोतल में चंद घूंट लायक पानी बचा था। दो घंटे पहले उसने एक घूंट पानी पिया था और उसके बाद भी बोतल के वजन को तौल कर अंदाजा लगाया था कि कितने घूंट पानी और उसमें बचा होगा। उसकी वर्दी कई स्थानों से फट चुकी थी। बांह में हुए एक घाव से खून निकल कर सूख गया था पर वर्दी बांह के पास से पूरी लाल हो गई थी। घाव में रह-रह कर टीस उठ रही थी। उसके हाथ में एक बन्दूक थी और कमर पर ढेरों कारतूस।

कितनी अजीब बात थी कि लगभग मरणासन्न स्थिति में चलते सैनिक के पास जीवन बचाने की सामग्री नहीं के बराबर थी और जीवन खत्म करने की सामग्री अधिक। वह इस सामग्री को बचाकर चलते रहने के लिये मजबूर था। इस अवस्था में वह लगभग चेतनाशून्य हो चुका था। उसे पता नहीं था कि वह आखिर इतना बोझ उठाकर जा कहां रहा है। बस वह निरन्तर चलता जा रहा था। किसी भी सैनिक के साथ युद्ध के प्रारंभ में यही होता होगा कि वह दुश्मनों को अपनी सीमा से या फिर उनकी ही सीमा से खदेड़ने के लिये उन्हें मारता होगा या फिर कोई खुद उसे न मार दे, यह सोच कर।

युद्ध के दौर में यह मानसिकता सबसे अधिक व्यापक होती है कि सामने वाले को मारना इसलिये जरूरी है कि कहीं कोई उसे नहीं मार दे। और मौत से बचने के लिए मौत नाचती है। इसके बाद कुछ दिनों तक युद्ध में लगे रहने के बाद लाशों का दृश्य, सैनिकों की चीख, गोलियों की गड़गड़ाहट, बमों के धमाके, मौत के भय से सैनिक इतना सम्मोहित हो चुका होता है, मानसिक चेतना से ऐसा पंगु हो चुका होता है कि वह दुश्मन को देखते ही एक मशीन की तरह गोली चलाता है या संगीन सामने वाले के सीने में घोंप देता है। उसे दूसरे के या अपने घाव का या किसी प्रकार की भावना का कुछ अहसास नहीं रहता। उस पर भूख और प्यास की लगातार मार। यह सैनिक भी ऐसी हालत में पहुंच चुका था। उसे पता नहीं था कि उसने कितनों को मारा है।

प्रारंभ में उसने राउंड की गिनती के साथ अपने हाथों मारे गए सैनिकों की गिनती करने की कोशिश की थी पर अब वह पानी के घूंटों की गिनती कर रहा था। इन सबसे बड़ी चीज, जिससे हर सैनिक सबसे अधिक प्रभावित होता है, पर सैनिक के किसी घाव की तरह दिखती नहीं - परिवार वालों की याद। उनके पास न पहुंच पाने के डर का जिक्र ही नहीं होता। हर प्रकार के अहसास और अहसास शून्यता के बावजूद हर सैनिक इस डर से हर क्षण रू-ब-रू होता है।

हर सैनिक के पास इस समय का एक ही साथी होता है- उसकी बन्दूक। बारूद के धुंए, गंध से भरी, लगातार खांसती, सजग, चौकस तथा ज्यादा से ज्यादा गोलियों की लगातार मांग करती बन्दूक। बर्फ पर चलते सैनिक के कोट की बाहरी परत के समान उसका पिछला भाग ठंडा रहता है पर उसकी नली हमेशा गरम रहती है। इस सैनिक के बन्दूक की भी यही हालत थी। बल्कि इससे भी ज्यादा खराब। सैनिक ने बन्दूक की संगीन एक दुश्मन सैनिक के दिल में उतार दी थी। पता नहीं कितनी तस्वीरें बन्दूक ने उस सैनिक के दिल में उतर कर देखी थी। एक पत्नी जो चावल बुनती दरवाजे की तरफ बार-बार देखती थी। एक बूढ़ी मां जिसने हमेशा के लिये ही अपनी चारपाई दरवाजे के पास डलवा ली थी और खुली आंखों से माला जपने का प्रयास करती दिख रही थी। एक बच्चा, लगभग दस साल का, जो कि अभी-अभी स्कूल से आया ही था और अपनी मां से रोटी मांग रहा था।

एक छोटी सी बच्ची, जिसकी मां ने आज दो चोटियां बनाई थीं।

वह आंगन में रेंगते एक छोटे से कीड़े को हैरानी से देखते मुंह से तुतलाती आवाज में कुछ बोलने का प्रयास कर रही थी और कीड़े के थोड़ा सा आगे निकल जाने पर घुटने के बल रेंग कर उसका पीछा कर रही थी। उन सबकी चीत्कार भी सुनी थी बन्दूक ने। दिल से बाहर आई थी तो वही सन्नाटा,वही मौत,वही मारने और बचने की कोशिश। यहां सिर्फ, बर्फ की पहाड़ियां थीं, जहां कोई बच्चा नहीं था, कोई मां नहीं थीं, कोई पत्नी नहीं थी। बर्फ और सिर्फ बर्फ।

कभी-कभी दिख जाता कोई सैनिक, जिस पर गोलियां चलाना जरूरी हो जाता था। सैनिक की आंखों से चमक गायब हो चुकी थी। आंख की पुतलियों में बर्फ की छाया तो थी ही, पुतलियों से भीतर भी बहुत गहराई में, जहां किसी की तस्वीर बनती है, याद बनती है, वहां भी बर्फ पसर चुकी थी। युद्ध भूमि का तो जर्रा-जर्रा एक मौत की खामोशी को रोता है। इसके बावजूद सैनिक को लग रहा था कि उसकी बन्दूक लगातार उसकी ही तरफ देख रही थी। अपनी संगीन पर कई के खून के छींटे लिए बन्दूक उसे हमेशा सजग लग रही थी। मतिभ्रम की स्थिति में वह अपना सिर बार-बार झटक देता था। चलते-चलते सैनिक एकाएक रूक गया।

क्यों थक गये क्या?

अचानक सैनिक ने किसी को कहते सुना। उसने इधर-उधर देखा, कोई नहीं दिखा।

मैंने पूछा थक गये क्या? इस बार सैनिक के चौकन्ने कानों ने स्पष्ट सुना - बन्दूक उससे कह रही थी। चेतनाशून्य हो चुके सैनिक ने अपने सिर को झटका और बन्दूक को हैरानी से देखा। संवादहीनता की लम्बी स्थिति में उस बन्दूक का बोलना उसे जितना हैरान कर गया, उससे अधिक उसे बुरा लगा। वह चुप रहा पर बन्दूक थी कि मानो संवाद स्थापित करने को दृढ़ थी।

हां! बन्दूक के फिर पूछने पर वह बोल उठा। उसे अपनी आवाज पराई और बहुत दूर से आती सी लगी। मानो वह स्वयं किसी गहरे कुंए में गिर गया हो और कुंए के मुहाने पर खड़ा कोई व्यक्ति उससे कुछ बोला हो।

हां, थक गया। वह दोबारा बोल उठा। उसे लगा कि दोबारा बोलना जरूरी है ताकि वह निश्चय कर सके कि यह उसकी अपनी ही आवाज है।

तब आराम क्यों नहीं कर लेते? बन्दूक पूछी।

जब तक तू जिन्दा है, हम सैनिकों को आराम कहां? सैनिक चिढ़ कर बोला।

मैंने क्या किया? बन्दूक क्रोध और अपने पर लगते इल्जाम से हैरान हो कर बोली।

तू ही तो है जो कि हमें मारने मरने पर मजबूर करती है और मौत का डर दिखाती है।

पर हमें चलाता तो तू ही है, मैं खुद थोड़े ही चल जाती हूं।

मैं तेरे को न चलाऊं तो तेरी कोई साथिन मुझे मार जाएगी।

मेरी उस साथिन को भी तो तेरा कोई साथी चलाता होगा। बन्दूक व्यंग्य से मुस्कराई।

खबरदार! सैनिक गर्जा - वह मेरा साथी नहीं, मेरा दुश्मन होगा।

तुमने अन्य बन्दूकों को मेरी साथिन कहा है, क्योंकि हम एक ही जाति वर्ग की हुई। इसी तरह अन्य सैनिक तेरे जाति वर्ग के हैं इसलिए वह भी तो तेरे साथी हुए। बन्दूक ने तर्क दिया।

सैनिक उस तर्क से अचंभित हुआ। बात सही थी पर बिल्कुल गलत भी।

पता नहीं। वह बोला - मेरे को तो इतना पता है कि इस समय वह मेरे दुश्मन हैं और मेरा काम है उन्हें मारना।

बिल्कुल ठीक, बन्दूक बोली - तो तेरा काम है उन्हें मारना न कि यह कि वह तेरे दुश्मन हैं।

शायद यही। सैनिक संक्षिप्त सा बोला।

और तेरा काम उन्हें मारना है जो कि मेरी सहायता से कर रहा है। यानि कि मैं तेरा काम कर रही हूं।

पर तेरा काम भी तो मारना ही है। सैनिक चिढ़ कर बोला।

नहीं मेरा काम तो तेरा काम करना है, और तेरा काम है औरों को मारना।

पर तू यदि मेरे हाथ में रहने के बजाय किसी और के हाथ में भी रहती तो भी तेरा काम तो लोगों को मारना ही होता न।

बन्दूक एक बार निरुत्तर हो गई पर वह हार मानने वाली नहीं थी। वह नया तर्क पेश करती कि कोई दिखा। सजग सैनिक ने अपना काम किया। बन्दूक ने भी अपना काम किया। वह सैनिक चीखा तड़पा और इस सैनिक की तरफ अपनी खाली आंखों से देखते हुए शांत हो गया। सैनिक उसके पास गया। उसने उसकी वर्दी टटोली। उसके थैले में एक भी बिस्किट नहीं था। खाने की कोई भी चीज नहीं। यहां तक कि पानी की बोतल तो बिल्कुल खाली थी।

ओह! इसे तो वैसे ही मरना था - सैनिक ने अफसोस किया।

तो तेरे को कौन-सा बचना है! बन्दूक हंसी।

बकवास मत कर। सैनिक चीखा - मेरे परिवार वाले मेरा इंतजार कर रहे होंगे।

इसके परिवार वाले भी इसका इंतजार कर रहे होंगे।

मेरे एक छोटी-सी बेटी है। सैनिक की आंखों में एक आंसू लरजा।

इसकी अभी अभी शादी हुई थी। बन्दूक बोली।

इस कहानी को भारत सरकार द्वारा आयोजित अखिल भारतीय युवा कहानीकार प्रतियोगिता 2005 में मिला था प्रथम पुरस्कार

तेरे को क्या पता? सैनिक हैरान हुआ। तब तक वह उस सैनिक की लाश से कुछ दूरी पर आ चुका था।

मेरे को मेरी साथिन ने बताया। बन्दूक नीचे देखती बोली।

साथिन! कौन साथिन?

उस सैनिक की बन्दूक। तुम्हारे अनुसार वह मेरी साथिन ही तो थी न!

तूने उससे कब बात कर ली?

जब तुम अपने साथी की वर्दी और थैले को टटोल रहे थे।

खामोश! वह मेरा साथी नहीं। सैनिक चीखा।

ओह! बन्दूक व्यंग्य से हंसी - वह तुम्हारा कुछ नहीं। तुमने तो अपना काम किया है। किसी मां-बाप के जवान बेटे को मारना तुम्हारा काम है। किसी नवविवाहिता के पति को मारना तुम्हारा काम है। क्या पता उस नवविवाहिता के पेट में कोई जीव भी पल रहा हो। उस बेचारे को पैदा होने के बाद बाप का मतलब ही मालूम नहीं हो पाएगा। यह सब काम तुम्हारा है जो कि तुमने बखूबी किया है। यह काम तूने किया है। तूने उसे मारा है। सैनिक इस इल्जाम से बौखला कर बोला।

और तूने क्या किया है? बन्दूक पूछी।

मैंने ...? सैनिक एक पल सोच नहीं पाया कि वह क्या कहे। फिर संक्षिप्त खामोशी के बाद सिर झुकाकर बोला - शायद तू सही कह रही है। मैंने अपना काम किया है। यही काम, जो तू कह रही है।

बन्दूक यह सुनकर शांत रही। सैनिक ने एक पल उसके बोलने का इंतजार किया फिर बोला - तूने कुछ कहा नहीं?

क्या कहूं?बन्दूक उदास स्वर में बोली - तूने अपना काम किया और मैंने अपना। वह सैनिक मर गया। उसके परिवार वाले जीते जी मर गए। फिर कोई आएगा। वह भी अपना काम करेगा।

उसकी बन्दूक भी अपना काम करेगी और तुम भी मर जाओगे। मैं भी बर्फ में पड़ी-पड़ी सड़ जाऊंगी। यह कैसा काम है हम सबका, जिसमें सब को मारना है।

बन्दूक की बातें सुन सैनिक की पथराई आंखों से कहीं जीवन फिसला। एक आंसू आंख के नीचे जमी गर्द में समा गया।

हां! पता नहीं यह कैसा काम है? वह दुहराया। अचानक फिर कहीं कोई दिखा। दोनों सजग हो गए पर इस बार चूक हो गई। उधर से गोली चली और इस सैनिक को अपने सीने में एक आग धंसती महसूस हुई। वह गिर पड़ा। उसकी बन्दूक भी छिटक कर पास ही जा गिरी। सैनिक ने समझ लिया कि अब समय आ गया है।

तो उधर वालों ने अपना काम कर दिया। बन्दूक सहानुभूति, अपनत्व और अफसोस के मिले-जुले भावों से उसकी तरफ देखती मुस्कराती बोली।

हां! कराहता हुआ सैनिक बोला - मेरी बच्ची, मेरी पत्नी, मेरे ... मेरे मां बाप!! वह रो पड़ा।

तबसे उधर वाला सैनिक उसके पास आया। इस सैनिक ने उठने की कोशिश की। उधर वाला सैनिक इसे उठते देख सजग हुआ पर फिर यह देख कि बन्दूक कुछ दूर गिरी पड़ी है, संयत हो गया। उसने पास आकर इस सैनिक के पानी की बोतल को हाथ लगाया।

कुछ घूंट बाकी है। यह सैनिक उठने की कोशिश करता बोला - थैले में एक बिस्किट भी है। उस सैनिक ने पानी की बोतल को छोड़ उसके उठने में उसकी मदद की।

पानी पी लो। इधर वाला सैनिक बोला।

हां! उधर वाला सैनिक थका-सा उसके पास बैठता बोला। उसने भी अपनी बन्दूक उसकी बन्दूक के पास रख दी। दोनों बन्दूकें धीमे स्वर में मानो बतियाने लगी।

पानी की बोतल खुली और उधर के सैनिक ने एक घूंट भरा।

इस सैनिक की आंखों में अंधेरा छाने लगा था। प्यास इसे भी लग रही थी।

लो तुम भी पीओ। उस सैनिक ने बोतल उसकी तरफ बढ़ाई।

नहीं। सैनिक ने मुस्कराने की कोशिश की - मेरे अब यह बोतल क्या काम की? तुम इसे अपने पास रखो।

एक घूंट तो ले लो भाई। उधर वाला सैनिक जबरदस्ती उसके हाथ में बोतल थमाता बोला - ऊपर जा रहे हो, प्यासे क्यों जाओ।

मैं पी नहीं सकता। कहता सैनिक फिर लेट गया। मृत्यु की घड़ी करीब आ रही थी। दूसरे सैनिक ने यह देखा तो तुरंत उसका सिर अपनी गोद में रख लिया और पानी की बोतल से एक घूंट उसके मुंह में डाल दी। सैनिक ने संतोष के साथ आंख खोल कर उस सैनिक को देखा और फिर अपनी बन्दूक की तरफ देखता अंतिम बार बोला - तू सही कह रही थी। यह सब मेरे साथी ही हैं।

बन्दूक कुछ नहीं बोली। उस सैनिक ने पहले वाले सैनिक का सिर अपनी गोद में रखा हुआ था और दोनों की आंखें बिल्कुल पास पास थी। फिर इस सैनिक की आंखों से ज्योति गायब हो गई। मरने

वाले सैनिक की खुली आंखों से इस सैनिक को कई आकृतियां अपनी तरफ झांकती और धिक्कारती दिखाई दी। घबराकर उसने उसकी खुली आंखें हथेलियों से बंद कर दी फिर उसे जमीन पर लिटा दिया। फिर उधर के सैनिक ने इस सैनिक के थैले में से बिस्किट का टुकड़ा निकाला। उसे मुंह में डाला और बचे पानी में से एक और घूंट गले में डाला। उसने लाश पर अंतिम निगाह डाली और अपनी बन्दूक उठा कर जाने लगा। तभी पहले वाले सैनिक की बन्दूक बोल उठी - सुनो, तुम मुझे यूं छोड़ के मत जाओ।

दूसरा सैनिक बन्दूक के यूं बोलने पर हैरान नहीं हुआ। उसने भी चेतन्यशून्यता की स्थिति में शायद बन्दूक से ढेरों बातें की होंगी।

क्या करूं मैं तुम्हारा? वह स्नेह से बन्दूक को उठाते हुए बोला।

मेरे को तुम यहीं बर्फ में गाड़ जाओ।

मैं थक गई हूं। मैं अब काम नहीं करना चाहती। बस... बस बहुत हो गया। बन्दूक मानो रो उठी थी।

सैनिक ने बर्फ को अपने बन्दूक की संगीन से खुरचा और एक छोटा सा गड्ढा तैयार कर बन्दूक उसमें डाल दी। गड्ढे में से इस बन्दूक ने अपनी साथिन की तरफ देखा। उसकी साथिन अभी तक सजग थी। उधर सैनिक ने ज्यों की गड्ढे को भरा और जाने लगा था कि उसने देखा कि अचानक ही पास से ढेरों मृत सैनिक उठ कर खड़े हो गये हैं और सब बर्फ को खुरच कर गड्ढा तैयार करने लगे हैं। वह हैरान हो देखता रहा। सब मृत सैनिकों ने गड्ढे तैयार कर उसमें अपनी-अपनी बन्दूकें डालनी शुरू कर दी। फिर उन गड्ढों को भरा और एक दूसरे की तरफ देखकर हाथ हिलाये। फिर वैसे ही लेट गये जैसे मृत हो कर पड़े थे।

सैनिक ने अपने सिर को जोर से झटका दिया। पता नहीं उसे यह सब क्या दिख रहा था। शायद प्यास लगी थी और लगातार युद्ध की स्थिति से मतिभ्रम उत्पन्न हो गया था। उसने अपने बन्दूक की तरफ देखा। वह उसे बड़ी आशा भरी नजरों से देख रही थी। उसने अपने थैले को टटोला। खाने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। हां, कारतूसों से उसका थैला अब भी भारी हो रहा था। पानी की बोतल भी खाली थी।

उसने अपनी आंखें एक क्षण के लिए बन्द कर ली। उसके सामने उसका भविष्य स्पष्ट था। वह समझ सकता था कि वह मुश्किल से कुछ ही घंटों का मेहमान है। उसने अपने परिवार को याद किया। उसका बच्चा, उसकी पत्नी, विधवा मां। एक बहन जो कि इस इंतजार में थी कि इस बार उसका भाई आयेगा और किसी राजकुमार के साथ उसका साथ बांध देगा। उसने अपनी बन्दूक से बर्फ को कुरेदा और एक छोटा सा गढ्ढा तैयार किया फिर बन्दूक उसमें डाल दी। उसे लगा कि बन्दूक ने उससे कहा हो, अपना ध्यान रखना। गड्ढे में वापस बर्फ डालने के बाद वह आगे बढ़ चला। पता नहीं कहां की ओर। उसने अपना थैला भी वहीं पर छोड़ दिया था। अब वह खाली हाथ था, स्वयं की मौत मरने के लिये तैयार।

इन सबसे दूर, दुनिया की रंगबिरंगी हलचल में हजारों फैक्टियां धुआं उगल रही थीं। उनमें रोजाना लाखों की संख्या में बन्दूकें और कारतूस तैयार हो रहे थे। अनेक देश लाखों की संख्या नए रंगरूट भर्ती कर रहे थे। ■

यह लड़ाई निर्बल और बलवान की है : चंदा बाबू

गया। बेटे के कातिलों को सजा दिलाने के लिए मैं अंतिम सांस तक लडूंगा। मेरी सांसे उनकी आत्मा को समर्पित है। सत्य और शांति स्थापना के लिए मेरे द्वारा लड़ी जा रही यह लड़ाई निर्बल और बलवान की है। मैं किसी भी परिस्थिति में पीछे नहीं हट सकता। अपनी नम आंखें और दबी आवाज में 8 अक्टूबर, 2017 को ये बात सीवान के चन्द्रकेश्वर प्रसाद उर्फ चंदा बाबू ने शहर आजाद पार्क में कही। आजाद पार्क में गांधी परिषद् नामक संस्था ने चंदा बाबू के संघर्ष के सम्मान में एक कार्यक्रम आयोजित किया था।

चंदा बाबू ने कहा कि इतिहास गवाह है कि असत्य पर हमेशा सत्य की ही विजय होती है। किसी की गीदड़ भभकियों से हम डरने वाले नहीं। साथ ही उपस्थित लोगों को गांधी के विचारों पर चलने के लिए प्रेरित किया। संबोधन के पूर्व गांधी परिषद् के सदस्यों द्वारा चंदा बाबू के संघर्ष पूर्ण जीवन में भी डटे रहने के लिए सम्मानित

किया गया। मालूम हो कि चंदा बाबू के दो बेटों की सीवान के पूर्व सांसद शहाबुद्दीन के गुर्गों ने तेजाब से नहला कर हत्या कर दी थी। उसके बाद से चंदा बाबू उनके खिलाफ लड़ाई लड़ रहे हैं। ■

सगाई की अंगूठी अनामिका में ही क्यों

दुनियाभर में सगाई के समय कन्या तथा वर दोनों एक-दूसरे की **अनामिका** अंगुलियों में अंगूठी पहनाते हैं। ये अंगूठी अनामिका में

ही क्यों पहनी व पहनाई जाती है? इस बारे में आपने कभी सोचा है? इसके पीछे एक बड़ी वजह है। इसके पीछे की वजह इतनी दिलचस्प है कि आप जानेंगे तो हैरान रह जाएंगे।

ज्ञानी-मनीषियों के अनुसार हमारे हाथ की दसों अंगुलियां कुटुम्ब के समान हैं, परिवार के सदस्य हैं।

- हाथ के अंगूठे हमारे माता-पिता के प्रतीक हैं।
- अंगूठे के पास वाली अंगुली (तर्जनी) हमारे भाई-बहन की प्रतीक मानी जाती है।
- बीच की अंगुली (मध्यमा) हम खुद हैं।
- चौथी **अनामिका** मतलब हमारा जोड़ीदार है जिसे भारतीय वैदिक ग्रंथों में अर्द्ध भाग कहा है।
- अंतिम व सबसे छोटी अंगुली (करंगली) हमारे बच्चे हैं।

इस तरह पूरा हो गया कुटुम्ब।

अब आइए एक प्रयोग करते हैं जिसका वर्णन वैदिक ग्रंथों में भी मिलता है। आइए अब जानते हैं कि कुटुम्ब के लोगों से हमारे संबंध किस तरह से स्थापित किया गया है।

- दोनों हाथ **नमस्कार** मुद्रा में जोड़ लीजिए। हाथ जोड़िए। जोड़ लिया... ।
- अब बीच (मध्यमा) की दोनों अंगुली को एक-दूसरे से क्रॉस करते हुए हथेली से बांध लीजिए।
- इसके बाद अंगूठे एक-दूसरे से दूर कीजिए, वह आसानी से अलग हो जाता है। अंगूठा माता-पिता के प्रतीक हैं। आसानी से अंगूठे के अलग होने से स्पष्ट होता है कि माता-पिता का साथ हमें जीवनभर नहीं मिलता, कभी न कभी वह हमें छोड़ जाते हैं।
- अब अंगूठे को छोड़ उसके पास वाली तर्जनी अंगुली को खोलिए, वह भी खुलेंगी। कारण भाई-बहन का अपना परिवार हो जाता है, उनका खुद का अपना जीवन होता है।
- अब हाथ की सबसे छोटी अंगुली को आपस में खोलिए, वह भी खुलेंगी। कारण बच्चे बड़े होने पर घोसल छोड़ उड़ान भरने वाले ही होते हैं।
- इसके बाद अंगूठी वाली अनामिका को एक-दूसरे दूर कीजिए। कोशिश कर रहे हैं। क्या हो रहा है।

आश्चर्य हो रहा है। है ना ...। आश्चर्य की बात ही है। ये दोनों अंगुली दूर नहीं हो रहा, अलग नहीं हो रहा। कारण, जीवन-साथी, मतलब पति-पत्नी, जीवनभर एक साथ रहने वाले होते हैं। सुख और दुःख में परस्पर साथ निबाहने वाले होते हैं।

ये है आयुष्म का सही अर्थ!!!
अनामिका के अतिरिक्त सब व्यर्थ!!! ■

साभार: सोशल मीडिया व डॉ मत्यसेन्द्र प्रभाकर

Get up

So you failed once, the loser said.
So you failed once, the loser meant.
You took it wrong,
He meant it right.
You took a fall,
He wished you fight.
A Loss has come, the faith has gone.
Can you not just take Some loan?
A loan it is
of courage and some
To give it your all
when the doors are wrung.
May be the next time wont be bad
Get up and run just don't be sad.

Gaurav Baranwal
MV Phase 3, Delhi 96

शुभचिंतकों से अपील

पूरे देश के लिए दिल्ली विचारों का समावेशी शहर है। समावेशी विचारों से ही सर्वग्राही विचार आता है, जो पूरे देश के लिए एक आदर्श हो जाता है। ऐसे शहर से बरन पुंज पत्रिका प्रकाशित है। पत्रिका आत्मनिर्भर हो, इसके लिए समाज के शुभचिंतकों से आग्रह है कि पत्रिका से जुड़िए। पाठक के रूप में जुड़िए, लेखक के रूप में जुड़िए, विज्ञापनदाता के रूप में जुड़िए, विज्ञापन प्रतिनिधि के रूप में जुड़िए चाहे विचारक के रूप में जुड़िए, मगर जुड़िए जरूर।

बरन पुंज की टीम चाहती है कि दिल्ली से प्रकाशित इस पत्रिका को राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में देखा जाए। इसमें बंधुओं की सक्रिय भागीदारी हो। अपने क्षेत्रों में होने वाली घटनाओं, सूचनाओं, समाचारों का आदान-प्रदान हो। देश के विभिन्न प्रांतों, शहरों और कस्बों में रहने वाले बरनवाल बंधु जो किसी न किसी रूप में सम्मान के साथ जीविकोपार्जन में लगे हैं, वह कुछ नहीं तो कम-से-कम पत्रिका का पाठक बनें।

बरन पुंज पत्रिका का आजीवन पाठक बनने के लिए अपने जीवनकाल में सिर्फ एक बार ग्यारह सौ रुपए बरनवाल वैश्य सभा, दिल्ली के नाम चेक या ड्राफ्ट देना होगा। उसके बाद आपको नियमित रूप से आपके द्वारा दिये गए पते पर डाक या कूरियर से पत्रिका आपके पते पर मिलती रहेगी। जब-जब आप पता बदलने की जानकारी देंगे, आपको नए पते पत्रिका मिलती रहेगी।

आप सबके सहयोग से हम ऐसा संगठन खड़ा कर पाएंगे जहां परस्पर सहभागिता का वास होगा, स्वस्थ प्रतियोगिता की परम्परा का विकास होगा। प्रतियोगिता यह कि कौन सबसे अधिक समाज के लिए ऊर्जावान हो सकता है, कौन बेहतर नेटवर्कर हो सकता है, कौन अधिक मददगार बन सकता है। यही सकारात्मक प्रतियोगिता हमें हमेशा एक कदम आगे ले जाने को प्रेरित करता रहेगा।

निवेदक

दीपक बरनवाल

मीडिया सचिव , बरनवाल वैश्य सभा, दिल्ली

09312381305

चित्रकला प्रतियोगिता

संख्या चार

कक्षा दस तक के विद्यार्थियों के लिए एक रंग भरो प्रतियोगिता है। प्रतियोगिता का विषय है - **होली।** हम सब होली क्यों मनाते हैं? इसको लेकर ध्यान में रखते हुए एक रंगीन चित्र (पेंटिग्स) बनाना है।

होली विषय पर सतरंगी चित्र संपादकीय कार्यालय के पते पर भेजें। तीन सबसे बेहतर चित्र भेजने वाले नवांकुर चित्रकार को अगले अंक में प्रकाशित करेंगे और उन्हें सम्मानित करेंगे। पेंटिग्स भेजने की अंतिम तिथि **30 अप्रैल, 2018** है।

भेजने का पता है -

चित्रकला प्रतियोगिता 04

बरन पुंज,

आई-7, सेक्टर-12,

नोएडा, उ.प्र 201301.

■ **संपादक**

BARANWAL PICTURE CORNER

SURENDRA BARANWAL

Mob. 9818260729, 9818276441

Contct for

Wooden Frames, Italian Frames, Plain Glass or Mirror, Framing Hardware, Acrlic Sheet, Canvas Strecher

ADDRESS : Madhu Vihar, Khoda Colony, Ghaziabad (Opp. Kerala School, Mayur Vihar Phase 3, Delhi 110096)

क्या आप उतना पानी पीते हैं, जितना कि आपको पानी पीना चाहिए। आइए नीचे दिए चार्ट को देखिए कि एक व्यक्ति को कितना पानी अपने वजन के हिसाब से रोज पीना चाहिये।

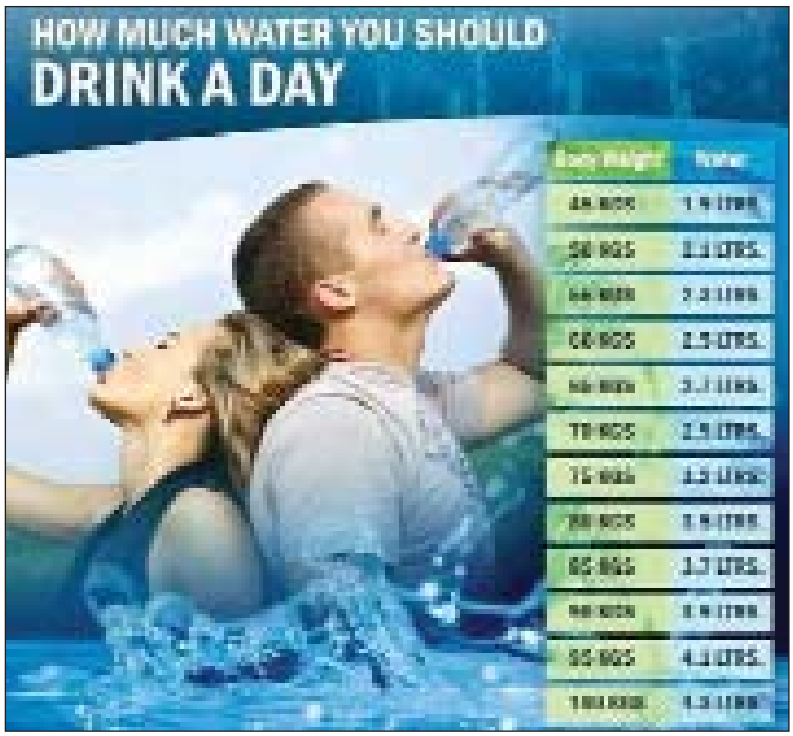

सच-सा

अगर
तुम सही हो तो
मनवाने के लिए
जरूरत नहीं डंडे की।

कुछ तो मुझ पर भी
छोड़ दो खुद ब खुद
समझने के लिए
गलत को गलत
सच को सच।

सच थोपना
सच के हक में
अच्छी बात नहीं
सुन भी लो कभी
जो कहते हो सच-सा।

दीपक राजा
मयूर विहार फेस 3,
दिल्ली 110096

बरनवाल सभा के सेल से जुड़ने के लिए फार्म

फोटो चस्पा करें

नाम : ....

पिता/पति का नाम : ....

जन्मतिथि : .... **शिक्षा :** ....

व्यवसाय : ....

सेल का नाम (जिससे जुड़ना चाहते हैं) : ....

पत्राचार का पता : ....
....

संपर्क नंबर : ....

ईमेल : ....

दिनांक : .... **हस्ताक्षर :** ....

फार्म भरकर पत्रिका के संपादकीय कार्यालय को भेजें। पता है - बरन पुंज, आई-7, सेक्टर-12, नोएडा, यूपी।

बरनवाल वैश्य सभा, दिल्ली के सदस्यों की सूची

जुलाई 2015 में निर्णय लिया गया कि दिल्ली में रहने वाले सभी बरनवाल बंधुओं से ग्यारह सौ रुपए लेकर संस्था का सदस्य बनाएंगे। सदस्य बंधुओं से प्रतिवर्ष एक सौ रुपए वार्षिक सदस्यता शुल्क लिया जाएगा। सदस्यों को सभा का सदस्य बने रहने तक सभा की गतिविधियों की जानकारी के साथ-साथ बरन पुंज पत्रिका डाक के माध्यम से भेजी जाती है।

बरनवाल वैश्य सभा के सदस्यों की सूची को ऑनलाइन प्रकाशित नहीं करना था, इसलिए पत्रिका में सदस्यों के नाम वाले पेज को खाली रखा गया है।

बरनवाल वैश्य सभा के सदस्यों की सूची को ऑनलाइन
प्रकाशित नहीं करना था, इसलिए पत्रिका में सदस्यों के नाम
वाले पेज को खाली रखा गया है।

बरनवाल वैश्य सभा के सदस्यों की सूची को ऑनलाइन प्रकाशित नहीं करना था, इसलिए पत्रिका में सदस्यों के नाम वाले पेज को खाली रखा गया है।

बरनवाल वैश्य सभा के सदस्यों की सूची को ऑनलाइन प्रकाशित नहीं करना था, इसलिए पत्रिका में सदस्यों के नाम वाले पेज को खाली रखा गया है।

बरनवाल वैश्य सभा के सदस्यों की सूची को ऑनलाइन प्रकाशित नहीं करना था, इसलिए पत्रिका में सदस्यों के नाम वाले पेज को खाली रखा गया है।

नोट : बरनवाल वैश्य सभा दिल्ली के सदस्यों की सूची पत्रिका प्रिंट (हार्ड कॉपी) में प्रकाशित है।

▪ **महासचिव,** बरनवाल वैश्य सभा, दिल्ली

आमंत्रण

बरन पुंज पत्रिका में समाज के कोई भी बंधु अपनी स्वरचित रचना, लेख, पुस्तक समीक्षा, फिल्म समीक्षा, कविता, कहानी या फिर समाजहित में सुझाव भेज सकते हैं। हम उन्हें यथोचित स्थान देंगे।

हमारा पता

आई 7, सेक्टर 12,

नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301

फोन : 9811044409, 9312381305

diparticommunication@gmail.com

Kanchan Lata Baranwal

MA, B.ed., LLB

Mob. : 9818530005

Contct for

Criminal, Civil and Matrimonial Matters

ADDRESS : F-101, Prince Appartment, I.P. Extension, Patparganj, Delhi 110092

बरनवाल वैश्य सभा, दिल्ली की कार्यकारिणी 2015-2017

संरक्षक मंडल

क्र.सं.	नाम	मोबाइल नं.	क्षेत्र
1	Dr. S R Gupta	9891407277	East Delhi
2.	Munni Lal	9811655581	Ghaziabad
3.	Arvind Pd. Baranwal (Retired IAS), Chairman, JERC		Ranchi
4.	Gyanesh Bharti (IAS), Joint Secretary, Govt. of India		Delhi

कार्यकारिणी

क्र.सं.	पद	नाम	मोबाइल नं.	क्षेत्र
1	President	Caption R. P. Baranwal	99996-39544	South Delhi
2	Vice-President	Sh. Arun Kumar	92121-42587	Laxmi Nagar
3	Gen. Secretary	Er. S.P. Baranwal	98110-44409	Noida
4	Treasurer	CA Prahlad Baranwal	95608-07601	Loni, GZB
5	Org. Secretary	Adv. Umesh Burnwal	99116-33057	Saket, Delhi
6	Media Secretary	Sh. Dipak Kumar	93123-81305	Delhi
7	Prog. Secretary	Sh. Jay Prakash Barnwal	96543-60704	Delhi 96
8	Cell Coordinator	Sh. Umesh Baranwal	98918-60639	Faridabad
9	Secretary	Sh. Harish C. Burnwal	98105-70862	Indrapuram
10	Exe. Member	Sh. Rajesh Baranwal	98683-60140	Badarpur
11	Exe. Member	Dr. N. K. Baranwal	98117-37212	Shashtripark
12	Exe. Member	Dr. Bharat Prasad	98689-43551	Delhi 92
13	Exe. Member	Sh. Ajay Baranwal	95551-25354	Dwarka
14	Exe. Member	Sh. Dinbandhu	98913-92779	Badarpur
15	Exe. Member	Sh. Deepak Baranwal	9810008139	Dwarka
16	Exe. Member	Sh. Arun Baranwal	9891065437	
17	Exe. Member	Dr. Dinesh Baranwal	9313101720	Delhi-59
18	Exe. Member	Sh. Satish C Baranwal	98686-16371	Chhatarpur
19	Exe. Member	Virendra Baranwal	92111-65458	Delhi 86
20	Invitee Member	Dr. Ajay Kumar	92106-64418	Faridabad
21	Invitee Member	CA Shravan Kumar	98915-16269	Laxmi Nagar
22.	Spl. Invt. Mem.	Smt. Vibha Lal	99908-04661	Con. Women
23	Spl. Invt. Mem.	Smt. Sobha Rani	9899805936	Dep. Con. Women

सीए सेल, मीडिया सेल, अधिवक्ता सेल, डॉक्टर सेल, व्यापारी सेल, सर्राफा सेल, नौकरी पेशा सेल, महिला सेल का गठन किया जा रहा है। सेल से जुड़ने के लिए बरनवाल बंधु सेल कोर्डिनेटर श्री उमेश बरनवाल 98918-60639 से संपर्क करें। आप चाहें तो कार्यकारिणी से भी संपर्क कर सकते हैं।

■ **ई. सत्यप्रकाश बरनवाल, महासचिव,** बरनवाल वैश्य सभा, दिल्ली

नोट: यह कार्यकारिणी 31 मार्च, 2018 तक मान्य है।

प्रेरक

चित्रकारी

एक राजा था जिसकी केवल एक टांग और एक आंख थी। उस राज्य में सभी लोग खुशहाल थे क्योंकि राजा बहुत बुद्धिमान और प्रतापी था। एक बार राजा के मन में विचार आया कि क्यों न खुद की एक तस्वीर बनवाई जाए। फिर क्या था? देश विदेशों से चित्रकारों को बुलवाया गया और एक से एक बड़े चित्रकार राजा के दरबार में आये। राजा ने उन सभी से हाथ जोड़कर आग्रह किया कि वो उसकी एक बहुत सुंदर-सी तस्वीर बनाए जो राजमहल में लगाई जाएगी।

सारे चित्रकार सोचने लगे कि राजा तो पहले से ही विकलांग है। उसके एक पैर नहीं है, उसे एक आंख भी नहीं है। फिर उसकी तस्वीर को बहुत सुंदर कैसे बनाया जा सकता है? ये तो संभव ही नहीं है। चित्रकारों ने सोचा कि अगर तस्वीर सुंदर नहीं बनी तो राजा गुस्सा हो सकते हैं। उन्हें राजदंड भी मिल सकता है। फिर यही सोच विचार करके सारे चित्रकारों ने राजा की तस्वीर बनाने से मना कर दिया। तभी पीछे से एक चित्रकार ने अपना हाथ खड़ा किया और बोला कि मैं आपकी बहुत सुंदर तस्वीर बनाऊंगा जो आपको जरूर पसंद आएगी। फिर चित्रकार जल्दी से राजा की आज्ञा लेकर तस्वीर बनाने में जुट गया।

काफी देर बाद उस चित्रकार ने एक तस्वीर तैयार की जिसे देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उस चित्र को देखकर सारे चित्रकारों ने अपने दातों तले अंगुली दबा ली। उस चित्रकार ने एक ऐसी तस्वीर बनाई जिसमें राजा घोड़े पर इस तरह से बैठा हुआ है कि उस चित्र में उसकी एक टांग पूरी तरह से दिखाई दे रहा है। और राजा

की एक आंख रानी साहिबा के लटक रहे बालों से ढकी हुई है।

राजा चित्र देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। चित्रकार ने राजा की कमजोरियों को छिपाकर अपनी कला और चतुराई से एक सुंदर तस्वीर बना दी। राजा ने उस चित्रकार को ढेर सारा इनाम दिया और धन दौलत दी। ■

सीख - चित्रकार की तरह जीवन में क्यों ना हम भी दूसरों की कमियों को छुपाएं। उनकी गलतियों को नजरअंदाज करें और उनकी अच्छाइयों पर ध्यान दें। आजकल देखा जाता है कि लोग एक-दूसरे की कमियां बहुत जल्दी ढूंढ लेते हैं। चाहे हम सबमें, खुद में कितनी भी बुराइयां हों लेकिन हम हमेशा दूसरों की बुराइयों पर ही ध्यान देते हैं कि अमुक आदमी ऐसा है, अमुक व्यक्ति वो वैसा है। हमें नकारात्मक परिस्थितियों में भी सकारात्मक सोचना चाहिए और हमारी सकारात्मक सोच हमारी हर समस्या का समाधान लेकर आती है।

Adv. Sandeep Gupta

LLB, LLM

Mob. : 9818530005

Contct for

Criminal, Civil and Service Matter.

ADDRESS : F-101, Prince Appartment, I.P. Extension, Patparganj, Delhi 110092

वैवाहिक विज्ञापन

वैधानिक चेतावनी: वैवाहिक विज्ञापन के पात्र संबंधी सूचना अभिभावक अपने स्तर से पूरी तरह से जांच कर संतुष्ट हो लें। विज्ञापन की सत्यता के लिए बरन पुंज पत्रिका या बरनवाल वैश्य सभा दिल्ली जिम्मेदार नहीं है।

वधू चाहिए

Suchit Kumar, 31 Yrs., 5'11", Diploma in interior designing and MBA, Interior designer and turnkey project Contractor have own company based on Delhi, Belongs from Siwan Bihar. 9582387334 facebook.com/suchit.barnwal

Aman Prakash, 26 Yrs, 5'7", B.Tech (Mech.), Pvt Job as Assist. Manager in Hydrabad Belongs from Munger, Bihar. 7903102314, 9933688495, 9576731636

Tej Narayan, 27 Yrs., 5'11", Intermediate, Business Hardware Wholesaler, Patna, Bihar. 7004969334 kanakdev001@gmail.com

Govind Pragya Baranwal, Mangalik, 28 Yrs., 5'10", B.A., Job in Dept. of Post (Govt. of India) in Noida Belongs from Ghazipur UP, 7800282205, 9456403082

Handsome Youngman, 31 Yrs., 5'9", MBA, CFA (USA) 1st Level, Entrepreneurs, Belongs from Mirzapur, UP. 9971397840, 8800425053 rohitbaranwal2007@gmail.com

Vivekanand Pd Baranwal (W), 40 Yrs., 5'7", Bsc, Teacher in Pvt School, Belongs from Bokaro, Jharkhand 9709050874 vivekosho97@gmail.com

वर चाहिए

Monika Baranwal, 25 Yrs, 5'3", B.Tech (Com. Sc.) MBA (Tourism), Own Travel venture Yellodec Trails in Delhi, Belongs from Patna, Bihar. Priority to Delhi/Metro City. 9334498825, 9434508787

Neha Baranwal, 29 Yrs., 5'4", Bsc, Final Year in BAMS from Govt.College), Pure Vegetarian, Priority to MBBS/BAMS. Belongs from Sultanpur, UP. 8960515025

Rani, 26 Yrs., 5'3", B.A. (Eco.), Belongs Nawada Bihar. 8409348955

Sweta baranwal, 25 Yrs., 5'5", MBA, Working in NIIT Gurgaon, Belongs from Sultapur, UP. 9451096230

Girl, 27 Yrs., 5'4", Job as Soft Eng in Oracle, Hydrabad, Req. working Professional IT 9504893323, 9654360704

आवश्यकता

पत्रिका के लिए विज्ञापन प्रतिनिधि बनने के लिए समाज के इच्छुक बरन बंधु संपर्क करें।

9312381305
9911633057
9811044409

सभा के संरक्षक अरविंद प्रसाद बने झारखंड ऊर्जा नियामक आयोग के अध्यक्ष

समाज की ओर से शुभकामनाएं प्रेषित

पद की शपथ लेते श्री अरविंद प्रसाद।

बरनवाल वैश्य सभा दिल्ली के संरक्षक और भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त अधिकारी अरविंद प्रसाद झारखंड ऊर्जा नियामक आयोग के अध्यक्ष बन गए। उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ झारखंड की राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने दिलाई। शपथ समारोह रांची स्थित राजभवन के दरबार हॉल में आयोजित था। इस अवसर पर मुख्यमंत्री रघुवर दास, मुख्य सचिव राजबाला वर्मा, विकास आयुक्त अमित खरे और कार्मिक सचिव निधि खरे सहित राज्य के कई वरीय प्रशासनिक एवं पुलिस पदाधिकारी भी मौजूद थे। श्री अरविंद प्रसाद इससे पहले संयुक्त बिहार में कार्मिक सचिव और केन्द्र में योजना आयोग के सलाहकार रह चुके हैं। वह उद्योगपतियों के संगठन फिक्की के महानिदेशक भी रह चुके हैं। झारखंड ऊर्जा नियामक आयोग के अध्यक्ष बनने पर बरनवाल वैश्य सभा की कार्यकारिणी ने एक प्रस्ताव पारित करके श्री अरविंद प्रसाद को बधाई प्रेषित किया है। बरनवाल समाज की ओर उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए और उनके करियर में नई उड़ान के लिए शुभकामनाएं भेजा है। इसके साथ उनसे समाज को अपेक्षा है कि वह भविष्य में भी सभा का मार्गदर्शन करते रहेंगे। ■

'ऑटोग्राफ देना अपनी परंपरा नहीं'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत पानीपत प्रवास के दूसरे दिन एसडी विद्या मंदिर स्कूल में दोपहर को स्वंयसेवकों के साथ भोजन करने के पश्चात जैसे ही भोजन कक्ष से बाहर निकलने लगे तो एक बाल स्वयंसेवक उनके पास आकर एक नोटबुक पर ऑटोग्राफ मांगने लगा। इस पर सरसंघचालक जी ने बाल स्वयंसेवक को समझाते हुए कहा कि ऑटोग्राफ देने की संघ की परंपरा नहीं है। और वह (भागवत जी) संघ के मुख्य स्वयंसेवक हैं। यदि वह स्वयं ही संघ की परंपरा को तोड़ेंगे तो दूसरे स्वयंसेवकों को क्या सिखाएंगे। यदि उन्होंने ऐसा किया तो इससे संघ में एक नई परंपरा चल पड़ेगी जो संघ पद्धति के अनुसार सही नहीं है। डॉ. भागवत जी ने बाल स्वयंसेवक को प्यार से समझाते हुए कहा कि यदि आप की इच्छा ऑटोग्राफ लेने की है तो इसके लिए आप मुझे एक पत्र लिखें, आपके पत्र के जवाब में मैं जो पत्र लिखूंगा, उस पत्र में मैं अपने जवाब के साथ अपने हस्ताक्षर भी करूंगा। ऐसा करने से आप की इच्छा भी पूरी हो जाएगी और संघ की परंपरा भी नहीं टूटेगी। ■

सत्य वचन

भूल या गलती होना प्रकृति है। गलती को न मानना विकृति है किन्तु गलती मानकर सुधार कर लेना संस्कृति है। जहां संस्कृति है, वहां प्रगति है।

भोगानंद शास्त्री जी महाराज

MILI 9540914198 9891704183

REEMA 9810164813 9810954813

Modicare

ADDRESS : RC-5, Block-B, Madhu Vihar, Behind Balaji Dharam Kanta, Khoda Colony, Ghaziabad, UP

नोटः अपने घर के खर्च को अपना बिजनेस बनाएं। अच्छी सेहत और एक लाख रुपए महीना कमाएं।

सूजी की कचौरी व पनीर टिक्का मसाला

☞ नविता

रैसिपी

सामग्री

कचौरी के लिए: एक कप सूजी, ढाई कप पानी, नमक स्वादानुसार, साबूत जीरा, मिर्च पाउडर, एक चम्मच तेल।

आलू मसाला के लिए: आलू 500 ग्राम, 2 चम्मच लहसून, अदरक व मिर्च का पेस्ट, नमक, हल्दी, मिर्च पाउडर, हिंग, सरसो, तेल।

पनीर टिक्का के लिए: 200 ग्राम पनीर, 1 प्याज, 2 टमाटर, 1 शिमला मिर्च, 100 ग्राम पानी निकाला हुआ दही, 1 बड़ा चम्मच कार्न फ्लोर, जीरा पाउडर, नमक, गर्म मासाला, मिर्च पाउडर, काली मिर्च पाउडर।

विधिः

आलू मसाला के लिए

सबसे पहले आलू उबालें। फिर उसे छिलकर मसल लें। एक पैन में तेल गरम करें और उसमें राई, हिंग डालें। फिर लहसून, अदरक मिर्च का पेस्ट डालकर थोड़ा फाई करें। अब मसले हुए आलू में नमक हल्दी मिर्च पाउडर डालकर भूनें।

कचौरी के लिए

पानी गर्म करें। उसमें नमक, तेल डालकर उबालें। फिर सूजी, मिर्च पाउडर, जीरा डालकर पानी सूखने तक पकाएं। उसे ठंडा करें। हाथ में तेल लगाकर छोटे-छोटे गोल बना लें। उसमें होल करके आलू मसाला भरकर अच्छी तरह से बंद करें। सारा लोया तैयार हो जाने पर पैन में ढककर घुमा-घुमाकर सेंक लें। आप चाहें तो इसे डिप फ्राई भी कर सकते हैं। अब इसे गरम गरम चटनी या सॉस के साथ खाएं।

पनीर टिक्का

दही में सारे मसाले, नमक, कार्न फ्लोर मिला दें। पनीर, प्याज, टमाटर (बिना पल्प), शिमला मिर्च सबको चोकोर टुकड़े में काट कर दही के मिश्रण में अच्छी तरह मिलाकर एक घण्टा फ्रिज में रखें। उसके बाद उसे पैन में तेल डालकर घुमा-घुमाकर फ्राई कर लें। पनीर टिक्का तैयार है। ■

(लेखिका नाइजीरिया में रह रही हैं।)

चित्रकला प्रतियोगिता नंबर 3

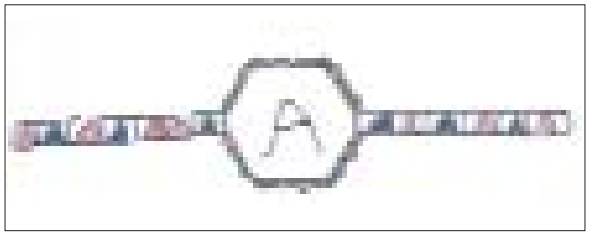

आदित्य बरनवाल, उम्र 3 वर्ष, कक्षा - प्ले ग्रुप
ए टू जेड प्ले स्कूल, मयूर विहार फेज 3, दिल्ली 96

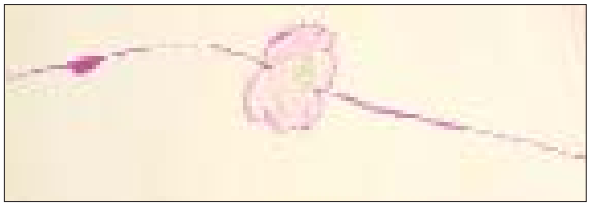

परी, उम्र 5 वर्ष, कक्षा - यूकेजी
आर.एस. कॉन्वेंट स्कूल, बदरपुर, दिल्ली

आयुष बरनवाल, उम्र 9 वर्ष, कक्षा - पांच
मोडर्न पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद, हरियाणा

चित्रकला प्रतियोगिता नंबर 3 में रक्षा बंधन पर आए पेंटिग्स को यहां प्रकाशित कर रहे हैं। ▪ **संपादक**

बरन पुंज पाठकों की सूची

कोई भी बरनवाल बंधु, ग्यारह सौ रुपए देकर बरन पुंज पत्रिका का आजीवन पाठक बन सकते हैं।

Serial	Name	Mobile	Area	Mem. No
1	Sh. Binod Kr	9335694086	Allahabad, U.P.	BP01
2	Sh. Sanjay Kr	8977729093	Hydrabad, U.P.	BP02
3	Smt. Archna Gupta	8271227041	Jamui, Bihar	BP03
4	CA Gautam Baranwal	9903836400	Kolkata, W.B.	BP04
5	Sh. Suresh Baranwal	9466200712	Sirsa, Haryana	BP05
6	Sh. Arvind Baranwal	9049455568	Mumbai, Maha	BP06
7	Sh. Ramesh Kumar	9324449870	Patna, Bihar	BP07
8	Sh. Rohit Kumar	7899554950	Bidar, Karnataka	BP08
9	Sh. Lokesh Baranwal	9416563008	Panipat, Haryana	BP09
10	Sh. Mahendra Modi	8953991950	Baharaich, U.P.	BP10
11	Dr. Ashok kr. Modi	9519667774	Sonbhadra, U.P.	BP11
12	Dr. K. C. Baranwal	8960977082	Varanasi, U.P.	BP12
13	Sh. Deepak Kumar	9892958022	Mumbai	BP13
14	Sh. Gopal Prasad	9034080811	Panipat, Haryana	BP14
15	Sh. Ravindra Prasad	9414118456	Nagaur, Rajsthan	BP15
16	Mr. Manish Kumar	7860543153	Sultanpur, UP	BP16

नोट : सभा के नियमों के कारण सदस्यों का पूरा पता प्रकाशित नहीं कर रहे हैं। ▪ **संपादक**

रांची, झारखंड में बरनवाल सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित समारोह में प्रतिभा सम्मान से सम्मानित झारखंड प्रदेश के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं के साथ प्रदेश के मुख्य सचिव सुनील बर्णवाल, आईएएस मृत्युंजय बर्णवाल व अन्य।

पटना, बिहार में गंगा तट पर दरभंगा हाउस के आसपास सफाई अभियान में भाग लेते बरनवाल युवा मंच के कार्यकर्ता।

देवरिया, उत्तर प्रदेश में सार्वदेशिक बरनवाल प्रतिनिधि सभा के एक कार्यक्रम में नेपाल बरनवाल महासभा के अध्यक्ष श्री रविन्द्र कुमार बरनवाल का सम्मान।

परिचय सम्मेलन की झलकियां

प्रेषित,

श्रीमान्

प्रापक नहीं मिलने पर इस पते पर पत्रिका वापस करें

बरन पुंज

कार्यालय : आई-7, सेक्टर-12, नोएडा,

यूपी-201301